DAILY CURRENT AFFAIRS

Result Mitra

09 April 2025

THE HINDU

The Indian EXPRESS

Hindustan Times

दैनिक जागरण

जनसत्ता

UPSC(IAS/PCS) AND ALL COMPITETIVE EXAM

PIB

THE HINDU

The Indian EXPRESS
JOURNALISM OF COURAGE

ABHAY SIR

Result Mitra

Topic 1:- दुबई के क्राउन प्रिंस की भारत यात्रा

Topic 2:- खूंखार भेड़ियों की वापसी: वैज्ञानिकों की अनोखी उपलब्धि

Topic 3:- विषय: वैश्विक मातृ मृत्यु दर में प्रगति को खतरा

Topic 4:- उद्योगों का नया वर्गीकरण – CPCB द्वारा 2024 संशोधन

Topic 5 :– ग्राफीन: एक चमत्कारी सामग्री

Topic 6- ढोकरा कला (Dokra Art)

दुबई के क्राउन प्रिंस की भारत यात्रा

- दुबई के क्राउन प्रिंस शेख हमदान बिन मोहम्मद अल मकतूम की भारत यात्रा: द्विपक्षीय संबंधों को मिलेगा नया आयाम

- दुबई के क्राउन प्रिंस शेख हमदान बिन मोहम्मद अल मकतूम 8 और 9 अप्रैल 2025 को भारत की आधिकारिक यात्रा पर आ रहे हैं।

- यह यात्रा उनके लिए क्राउन प्रिंस के रूप में भारत की पहली आधिकारिक यात्रा होगी, जो भारत और संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) के बीच गहरे होते संबंधों की पुष्टि करती है।

- यात्रा के दौरान, शेख हमदान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, विदेश मंत्री डॉ. एस. जयशंकर और रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह से मुलाकात करेंगे।
- इसके अतिरिक्त, वे मुंबई में आयोजित एक उच्च स्तरीय व्यापार सम्मेलन में भी भाग लेंगे, जहां भारतीय और अमीराती व्यवसायिक प्रतिनिधियों के साथ निवेश और व्यापार सहयोग पर चर्चा की जाएगी।

व्यापक रणनीतिक साझेदारी को मिलेगी गति

- भारत और यूएई के बीच लंबे समय से व्यापार, निवेश और सांस्कृतिक सहयोग को लेकर मजबूत संबंध रहे हैं।
- इस यात्रा के दौरान दोनों देशों के बीच ऊर्जा, डिजिटल तकनीक, स्वास्थ्य, शिक्षा, पर्यटन, और रक्षा जैसे क्षेत्रों में नए समझौतों और भागीदारी की उम्मीद है।

- भारत के विदेश मंत्रालय के अनुसार, क्राउन प्रिंस के साथ कई उच्च स्तरीय मंत्री, वरिष्ठ अधिकारी और प्रमुख उद्योगपतियों का प्रतिनिधिमंडल भी आएगा।

दुबई: भारतीय प्रवासियों और व्यापार का केंद्र

- यूएई में अनुमानित 43 लाख भारतीय प्रवासी रहते हैं, जिनमें से अधिकांश दुबई में बसे हुए हैं।
- यह अमीरात न केवल भारत के लिए एक प्रमुख व्यापारिक साझेदार है, बल्कि भारतीय संस्कृति और श्रमशक्ति के आदान-प्रदान में भी अग्रणी भूमिका निभाता है।
- दुबई भारत के लिए पश्चिम एशिया में एक आर्थिक और रणनीतिक प्रवेशद्वार के रूप में भी कार्य करता है।

नवीन संभावनाओं का द्वार

- शेख हमदान की यात्रा से न केवल वर्तमान सहयोग को मजबूती मिलेगी, बल्कि भविष्य के लिए नई रणनीतिक पहल और निवेश के रास्ते भी खुलेंगे।
- यह भारत-यूएई संबंधों को व्यापक रणनीतिक साझेदारी में परिवर्तित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम माना जा रहा है।

दुबई और भारत संबंध :–

- भारत और दुबई (यूएई) संबंध – UPSC के लिए महत्वपूर्ण बिंदु

1. ऐतिहासिक पृष्ठभूमि:

- भारत और यूएई के संबंध प्राचीन व्यापारिक संबंधों पर आधारित हैं।
- 1971 में यूएई के गठन के बाद से भारत ने इसे औपचारिक रूप से मान्यता दी और राजनयिक संबंध स्थापित किए।

2. राजनयिक संबंध:

- 2015 के बाद से भारत-यूएई संबंधों में उल्लेखनीय तेजी आई है।
- 2017 में दोनों देशों ने “Comprehensive Strategic Partnership” की घोषणा की।
- उच्च स्तरीय यात्राओं का आदान-प्रदान नियमित रहा है – PM मोदी की कई यूएई यात्राएँ और UAE के शासकों का भारत दौरा।

3. आर्थिक और व्यापारिक सहयोग:

- यूएई, भारत का तीसरा सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार है।
- दोनों देशों के बीच सालाना 85 अरब डॉलर से अधिक का द्विपक्षीय व्यापार होता है।
- CEPA (Comprehensive Economic Partnership Agreement) 2022 में लागू हुआ – इससे व्यापार शुल्कों में कटौती हुई और दोनों देशों के बीच व्यापार बढ़ा।

4. निवेश संबंध:

- यूएई भारत के ऊर्जा, बुनियादी ढांचे, बंदरगाह, हवाई अड्डे, और रियल एस्टेट क्षेत्रों में भारी निवेश कर रहा है।
- भारत में UAE Sovereign Wealth Funds का निवेश भी लगातार बढ़ रहा है।

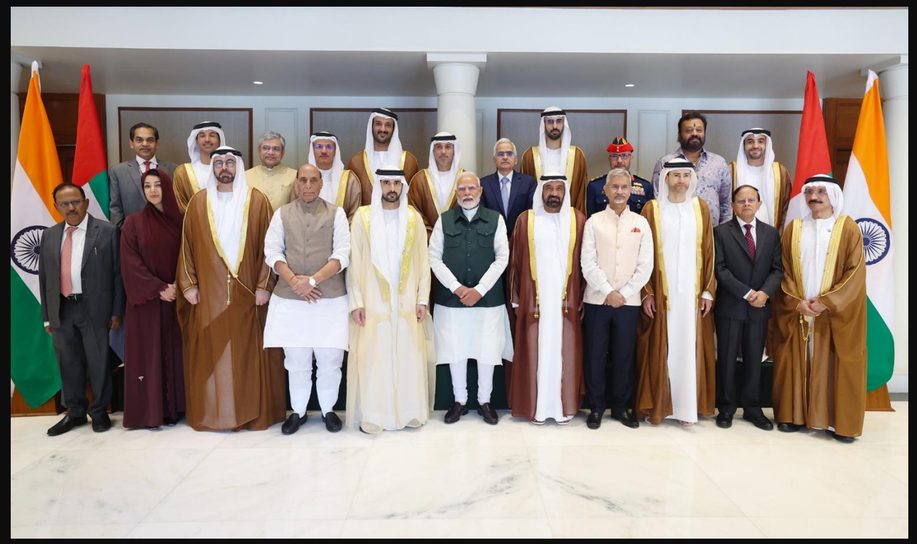

5. प्रवासी भारतीय और रेमिटेंस:

- लगभग 43 लाख भारतीय प्रवासी यूएई में रहते हैं, जिनमें से अधिकांश दुबई में हैं।
- भारत को यूएई से हर साल अरबों डॉलर का प्रवासी धन (remittance) प्राप्त होता है।
- दुबई में भारतीयों के लिए शिक्षा, स्वास्थ्य, और रोजगार के अवसर व्यापक हैं।

6. रक्षा और रणनीतिक सहयोग:

- साझा नौसैनिक अभ्यास और गुप्तचर सहयोग।
- आतंकवाद और कट्टरपंथ के खिलाफ संयुक्त रणनीति।
- साइबर सुरक्षा और समुद्री सुरक्षा के क्षेत्र में समझौते।

7. सांस्कृतिक और सामाजिक संबंध:

- दुबई में भारतीय त्योहारों और संस्कृति का बड़ा प्रभाव है।
- बॉलीवुड, योग और भारतीय व्यंजन वहाँ बेहद लोकप्रिय हैं।
- UAE में कई भारतीय स्कूल, मंदिर, और सांस्कृतिक संस्थान सक्रिय हैं।

खूंखार भेड़ियों की वापसी: वैज्ञानिकों की अनोखी उपलब्धि

- ***1. विलुप्त प्रजाति की वापसी:*** करीब 12,500 साल पहले विलुप्त हो चुके खूंखार भेड़ियों (Dire Wolves) को वैज्ञानिकों ने जीन एडिटिंग और क्लोनिंग तकनीक से फिर से जीवित किया।
- ***2. तीन पिल्लों का जन्म:*** वैज्ञानिकों ने भूरे भेड़ियों के डीएनए में बदलाव कर तीन खूंखार भेड़िए के पिल्ले बनाए—दो नर (जन्म: अक्टूबर 2024) और एक मादा (जन्म: जनवरी 2025)।
- ***3. जैविक आधार:*** 13,000 साल पुराने दांत और 72,000 साल पुरानी खोपड़ी से प्राचीन डीएनए निकाला गया और विशिष्ट जीन की पहचान कर एडिटिंग की गई।

- ***4. जीन एडिटिंग तकनीक:*** CRISPR तकनीक की मदद से 14 जीन में 20 बदलाव किए गए, जिससे भूरे भेड़िए में खूंखार भेड़िए जैसे लक्षण आए।
- ***5. हाइब्रिड संरचना:*** नए जीव 99.9% भूरे भेड़िए हैं, लेकिन उनका रूप, आकार और गुण खूंखार भेड़ियों जैसे हैं—जैसे चौड़ा सिर, मोटा फर और मजबूत जबड़ा।
- ***6. गुप्त लोकेशन पर पालन-पोषण:*** पिल्लों को एक 2000 एकड़ की सुरक्षित, निगरानीयुक्त जगह पर रखा गया है जो अमेरिकी कृषि विभाग द्वारा पंजीकृत है।
- ***7. सरोगेट उपयोग:*** पिल्लों को जन्म देने के लिए घरेलू कुत्तों (बड़े, मिश्रित नस्ल के हाउंड) को सरोगेट के रूप में उपयोग किया गया।

- ***8. अन्य प्रजातियों को भी लाभ:*** इसी तकनीक से वैज्ञानिकों ने लाल भेड़िए की गंभीर रूप से संकटग्रस्त प्रजाति के दो क्लोन शावक भी बनाए हैं।
- ***9. आलोचना और चिंता:*** कुछ विशेषज्ञों का मानना है कि इस परियोजना पर खर्च को अन्य संरक्षण कार्यों में लगाना बेहतर होता, और सरोगेट जानवरों की सुरक्षा पर भी सवाल उठाए गए।
- ***10. भविष्य की भूमिका पर सवाल:*** वैज्ञानिकों ने स्पष्ट किया है कि यह कल्पना करना कठिन है कि इन खूंखार भेड़ियों को कभी खुले जंगलों में छोड़ा जाएगा या वे कोई पारिस्थितिकीय भूमिका निभाएंगे।

भेड़िया एवं उसकी प्रजातियाँ (Wolves and their Species)

1. परिचय:

- भेड़िया (Wolf) एक मांसाहारी स्तनधारी है, जो Canidae कुल (Family) से संबंधित है।
- इसका वैज्ञानिक नाम Canis lupus है।
- भेड़िए सामाजिक प्राणी होते हैं और झुंडों में रहते हैं।

- ***2. प्रमुख भेड़िया प्रजातियाँ:***

प्रजाति का नाम	वैज्ञानिक नाम	विशेषताएँ	संरक्षण स्थिति
ग्रे वुल्फ (भूरा भेड़िया)	*Canis lupus*	सबसे आम प्रजाति, उत्तरी अमेरिका, यूरोप और एशिया में पाई जाती है।	Least Concern (IUCN)
इंडियन वुल्फ (भारतीय भेड़िया)	*Canis lupus pallipes*	छोटा, कम फर वाला, भारत, पाकिस्तान और ईरान में पाया जाता है।	Schedule I (WPA 1972), Endangered (IUCN)

- ***2. प्रमुख भेड़िया प्रजातियाँ:***

हिमालयी वुल्फ	*Canis lupus chanco* या *Canis himalayensis*	उच्च हिमालय क्षेत्र में पाया जाता है, जलवायु अनुकूलन में सक्षम।	अनुसंधान जारी
रेड वुल्फ	*Canis rufus*	अमेरिका में पाई जाने वाली विलुप्तप्राय प्रजाति।	Critically Endangered
इथियोपियन वुल्फ	*Canis simensis*	केवल इथियोपिया में पाया जाता है, अत्यंत दुर्लभ।	Endangered

Result Mitra

- ***2. प्रमुख भेड़िया प्रजातियाँ:***

	डायर वुल्फ (खूंखार भेड़िया)	*Aenocyon dirus* (विलुप्त)	लगभग 12,500 वर्ष पूर्व विलुप्त; बड़ा सिर, मजबूत जबड़ा, विशाल आकार।	पुनर्जीवित (जीन एडिटिंग द्वारा)

3. भारत में भेड़ियों की स्थिति:

प्रमुख प्रजातियाँ:

- भारतीय भेड़िया (Canis lupus pallipes)
- हिमालयी भेड़िया (Canis himalayensis)

संरक्षण:

- वन्यजीव संरक्षण अधिनियम, 1972 के अनुसूची-I में शामिल।
- CITES परिशिष्ट-I में भी सूचीबद्ध।
- IUCN स्थिति: संकटग्रस्त (Endangered)

वितरण क्षेत्र:

- महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, राजस्थान, गुजरात, कर्नाटक और उत्तर भारत के कुछ हिस्से।
- हिमालयी क्षेत्र में विशेष रूप से लद्दाख और उत्तराखंड।

4. खतरे (Threats):

- आवास विनाश (Habitat Loss)
- मानव-पशु संघर्ष
- शिकार और अवैध व्यापार
- भोजन की कमी
- आनुवंशिक विविधता में गिरावट

5. संरक्षण उपाय (Conservation Measures):

- संरक्षित क्षेत्र (Protected Areas)
- वन्यजीव अधिनियम के अंतर्गत सुरक्षा
- शोध परियोजनाएँ (जैसे हिमालयी भेड़िया पर डीएनए विश्लेषण)
- समुदाय आधारित संरक्षण
- पुनःप्रजनन कार्यक्रम (Captive Breeding)

विषय: वैश्विक मातृ मृत्यु दर में प्रगति को खतरा

प्रासंगिकता: स्वास्थ्य | अंतर्राष्ट्रीय संबंध | सतत विकास लक्ष्य (SDGs) | महिला सशक्तिकरण

मुख्य बिंदु (Important Points):

1. संयुक्त राष्ट्र की चेतावनी:

- सहायता बजट में कटौती से मातृ मृत्यु दर को कम करने की वर्षों की प्रगति पर गंभीर खतरा।
- मातृ मृत्यु दर में वृद्धि की आशंका।

2. डब्ल्यूएचओ रिपोर्ट (2000–2023):

- वैश्विक मातृ मृत्यु दर में 40% की गिरावट दर्ज की गई।
- इसका मुख्य कारण – आवश्यक स्वास्थ्य सेवाओं तक बेहतर पहुँच।

3. वित्तीय कटौतियाँ:

- यूएसएआईडी (अमेरिका) द्वारा विदेशी सहायता में कटौती।
- ब्रिटेन सहित अन्य दाता देशों ने भी सहायता बजट घटाया।
- इससे कई देशों में स्वास्थ्य सेवाएँ बाधित हो रही हैं।

4. प्रभावित सेवाएं:

- मातृ, नवजात और बाल स्वास्थ्य सेवाएं बाधित।
- स्टाफ में कटौती, फैसिलिटी बंद, औषधियों और उपकरणों की आपूर्ति प्रभावित।
- गर्भावस्था संबंधी जटिलताओं जैसे रक्तस्राव व प्री-एक्लेमप्सिया का इलाज भी प्रभावित।

5. महत्वपूर्ण आंकड़े:

- 2023: हर 2 मिनट में 1 महिला की मृत्यु (कुल ~2.6 लाख)।
- अधिकतर मौतें रोकथाम योग्य और उपचार योग्य कारणों से।
- 2021 में: कोविड-19 के कारण अतिरिक्त 40,000 मातृ मौतें।

6. विशेष रूप से प्रभावित देश:

- संघर्ष या प्राकृतिक आपदाओं से प्रभावित देश – विशेष रूप से कमजोर स्थिति।
- अमेरिका, वेनेजुएला, डोमिनिकन गणराज्य, और जमैका – इन देशों में 2000 के बाद मातृ मृत्यु दर बढ़ी।

7. डब्ल्यूएचओ की टिप्पणी:

- फंडिंग में कटौती से "महामारी जैसा प्रभाव" पड़ा है।
- गंभीर संरचनात्मक असर की संभावना।

8. संबंधित सतत विकास लक्ष्य (SDG):

- SDG 3.1: 2030 तक वैश्विक मातृ मृत्यु दर को 70 प्रति 1 लाख जीवित जन्मों तक कम करना।
- यह लक्ष्य अब संकट में।

मातृ मृत्यु दर और भारत (Maternal Mortality Rate & India) –

1. मातृ मृत्यु दर (MMR) क्या है?

- यह प्रति 1,00,000 जीवित जन्मों पर गर्भावस्था या प्रसव से संबंधित कारणों से मरने वाली महिलाओं की संख्या होती है।

- यह किसी भी देश के स्वास्थ्य प्रणाली, महिला सशक्तिकरण, और प्रसूति सेवाओं की गुणवत्ता का एक महत्वपूर्ण संकेतक है।

2. भारत में वर्तमान स्थिति (डेटा आधारित):

- भारत ने SDG लक्ष्य (70 से कम) की ओर अच्छी प्रगति की है।
- कई राज्यों ने राष्ट्रीय औसत से बेहतर प्रदर्शन किया है – जैसे केरल (MMR ~19), महाराष्ट्र, तेलंगाना, आदि।

3. मातृ मृत्यु के प्रमुख कारण (भारत में):

- प्रसव के दौरान रक्तस्राव (Hemorrhage)
- प्रे-एक्लेम्पसिया / एक्लेम्पसिया (उच्च रक्तचाप संबंधी समस्याएं)
- संक्रमण (Sepsis)
- गर्भपात की जटिलताएं
- कमज़ोरी, एनीमिया (विशेषकर ग्रामीण महिलाओं में)
- समय पर चिकित्सा सुविधा की अनुपलब्धता

- ***4. भारत सरकार की प्रमुख पहलें:***

योजना / कार्यक्रम	उद्देश्य
जननी सुरक्षा योजना (JSY)	संस्थागत प्रसव को बढ़ावा देना।
प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना (PMMVY)	गर्भवती महिलाओं को वित्तीय सहायता।
लक्ष्य कार्यक्रम	गुणवत्तापूर्ण मातृत्व देखभाल के लिए स्वास्थ्य कर्मियों को प्रशिक्षित करना।
जननी शिशु सुरक्षा कार्यक्रम (JSSK)	मुफ्त गर्भावस्था व प्रसव सेवाएं।
मिशन इंद्रधनुष	मातृ और शिशु टीकाकरण बढ़ावा देना।
आयुष्मान भारत (AB-HWC)	प्राथमिक स्वास्थ्य सेवा सुलभ बनाना।

5. चुनौतियाँ:

- ग्रामीण व दूरस्थ क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाओं की कमी
- कुपोषण और एनीमिया
- सामाजिक मान्यताएं व बाल विवाह
- ASHAs और ANMs की संख्या में कमी या प्रशिक्षण की कमी
- प्रसवपूर्व व प्रसवोत्तर देखभाल की अनदेखी

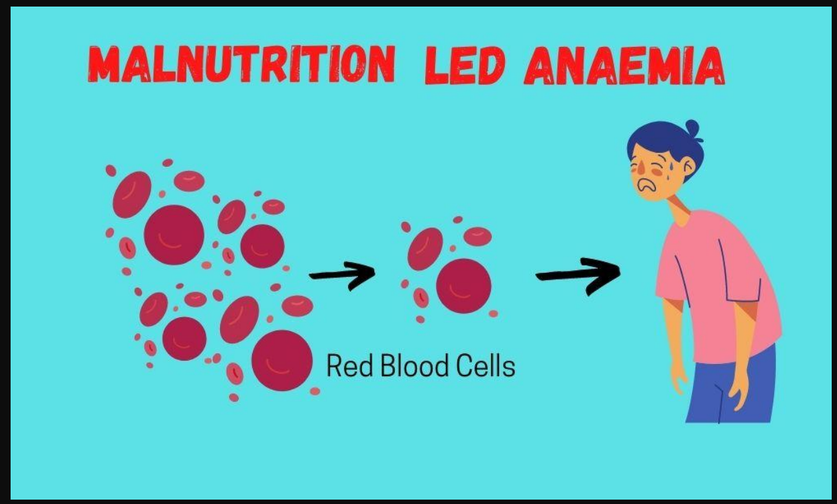

उद्योगों का नया वर्गीकरण – CPCB द्वारा 2024 संशोधन

1. क्या किया गया है?

- केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (CPCB) ने उद्योगों को उनके प्रदूषण स्तर के आधार पर नए सिरे से वर्गीकृत किया है।
- अब कुल 419 उद्योगों को पाँच श्रेणियों में बाँटा गया है:

2. वर्गीकरण का आधार:

प्रदूषण के तीन प्रमुख स्रोतों पर समान भारांश (equal weightage) दिया गया है:

- जल प्रदूषण (Water Pollution)
- वायु प्रदूषण (Air Pollution)
- खतरनाक अपशिष्ट (Hazardous Waste)
- इसी आधार पर उद्योगों को प्रदूषण सूचकांक (Pollution Index) के अनुसार श्रेणियों में रखा गया।

3. नई 'ब्लू श्रेणी' की विशेषता:

- यह नई जोड़ी गई श्रेणी है, जिसमें ऐसे उद्योग शामिल किए गए हैं:
- जो घरेलू या सामुदायिक अपशिष्ट के निपटान से जुड़ी पर्यावरणीय सेवाएं प्रदान करते हैं।
- जैसे – Compressed Biogas Plants (CBG) जो कचरा, कृषि अवशेष, घास या खरपतवार से बायोगैस बनाते हैं।
- इसका उद्देश्य अपशिष्ट प्रबंधन को बढ़ावा देना और साफ-सफाई से जुड़ी गतिविधियों को समर्थन देना है।

4. रेड श्रेणी में क्या रहेगा?

- वे CBG प्लांट्स जो औद्योगिक या प्रक्रिया अपशिष्ट से चलते हैं और जिनसे ज्यादा प्रदूषण फैलता है – वे अभी भी रेड श्रेणी में ही रहेंगे।

5. प्रोत्साहन (Incentives):

- जो उद्योग पर्यावरणीय नियमों का सही पालन करते हैं:
- उन्हें परमिट (अनुमति पत्र) की अवधि बढ़ाकर प्रोत्साहित किया जाएगा।
- इससे उद्योगों को नियमों का पालन करने में प्रेरणा मिलेगी और प्रक्रिया आसान होगी।

6. क्यों जरूरी है यह वर्गीकरण?

- ताकि सरकार यह तय कर सके:
- किस उद्योग को किन नियमों और निगरानी की जरूरत है।
- स्वच्छ भारत और सतत विकास लक्ष्यों को बेहतर ढंग से लागू किया जा सके।

ग्राफीन: एक चमत्कारी सामग्री

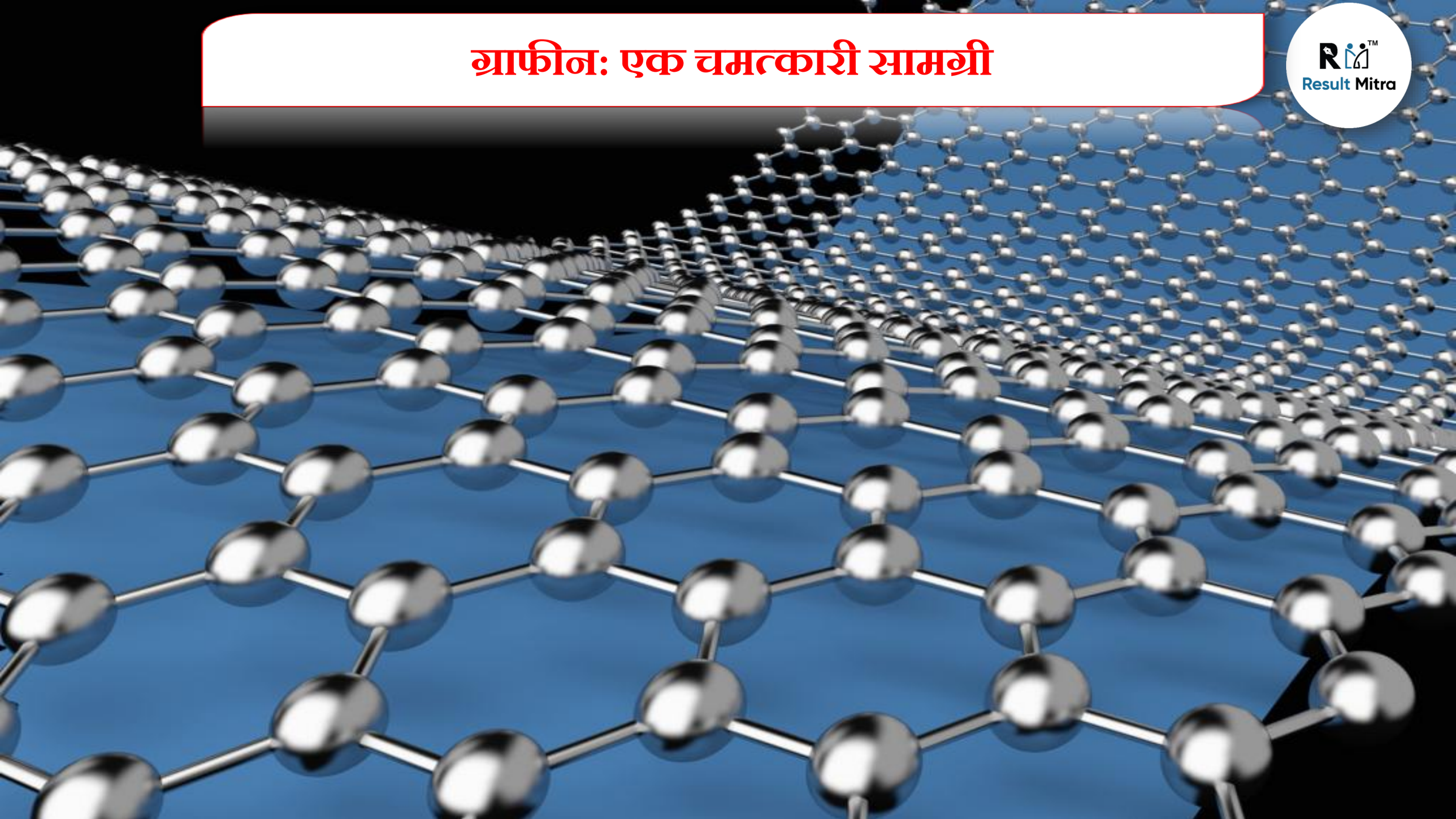

परिचय:

- ग्राफीन कार्बन का एक क्रांतिकारी अपरूप (allotrope) है, जिसे वैज्ञानिकों ने पहली बार 2004 में पृथक किया था।
- यह केवल एक परमाणु मोटी परत होती है, जिसमें कार्बन परमाणु षट्कोणीय जाल (hexagonal lattice) में व्यवस्थित होते हैं। इस संरचना के कारण ग्राफीन में असाधारण भौतिक और रासायनिक गुण देखने को मिलते हैं।

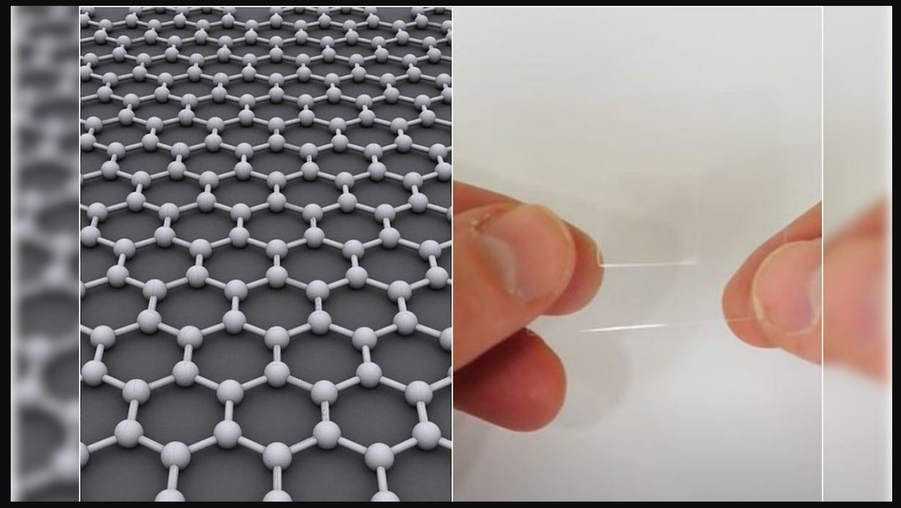

मुख्य विशेषताएँ:

- मजबूती: ग्राफीन स्टील से लगभग 200 गुना अधिक मजबूत होता है, फिर भी यह बहुत हल्का होता है।
- पारदर्शिता: यह लगभग पारदर्शी होता है, क्योंकि यह प्रकाश का लगभग 97.7% भाग गुजरने देता है।

- तापीय चालकता: ग्राफीन में बहुत उच्च स्तर की तापीय चालकता होती है, जिससे यह अत्यधिक गर्मी को भी सहन कर सकता है।
- विद्युत चालकता: यह एक उत्कृष्ट विद्युत चालक है, जो इसे इलेक्ट्रॉनिक्स में आदर्श बनाता है।
- लचीलापन: इसकी पतली परतें बेहद लचीली होती हैं, जिन्हें मोड़ा जा सकता है।

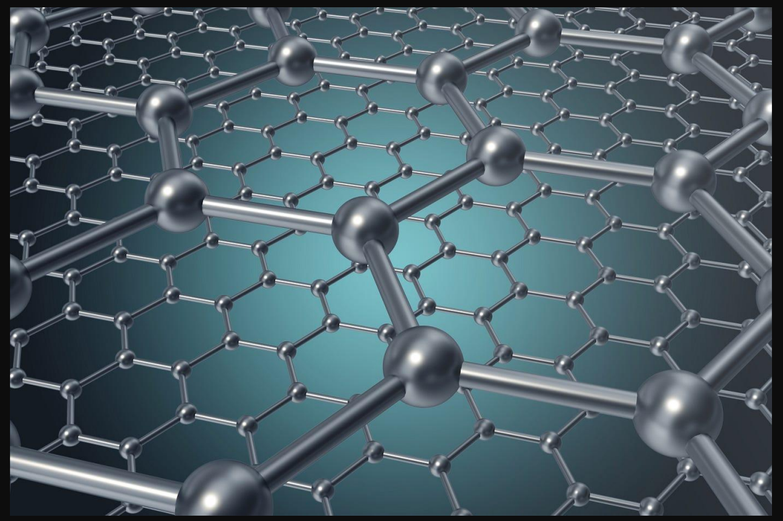

प्रमुख अनुप्रयोग:

1. इलेक्ट्रॉनिक्स:

- ट्रांजिस्टर, सेंसर्स और सुपरफास्ट माइक्रोचिप्स में उपयोग।
- फ्लेक्सिबल डिस्प्ले और टचस्क्रीन में भी संभावनाएँ।

2. ऊर्जा भंडारण:

- उच्च दक्षता वाली बैटरियों और सुपरकैपेसिटर्स के निर्माण में।
- सौर कोशिकाओं (solar cells) में भी इसके उपयोग की संभावना है।

3. पर्यावरण:

- जल शुद्धिकरण, तेल-जल पृथक्करण तथा जलसंवहन प्रणालियों में।
- प्रदूषकों को छानने में सहायक।

Result Mitra

4. जैवचिकित्सा:

- दवा डिलीवरी सिस्टम, बायोसेंसर और ऊतक इंजीनियरिंग में संभावनाएँ।
- कैंसर जैसी बीमारियों की पहचान व उपचार में सहायता।

5. अन्य उपयोग:

- मजबूत और हल्की सामग्रियों के निर्माण (जैसे हेलमेट, विमान भाग आदि)।
- रासायनिक सेंसर और कंपोजिट मटेरियल्स में।

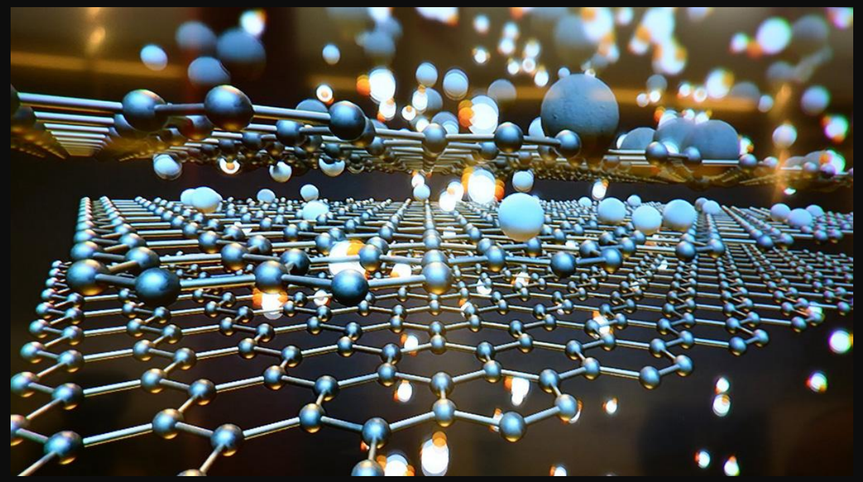

आईआईटी खड़गपुर की पहल:

- आईआईटी खड़गपुर ने हाल ही में ग्राफीन-आधारित ऊर्जा दक्ष प्रौद्योगिकी विकसित की है जो तेल और जल के मिश्रण को प्रभावी ढंग से पृथक कर सकती है।
- यह तकनीक तेल रिसाव जैसे पर्यावरणीय संकटों से निपटने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

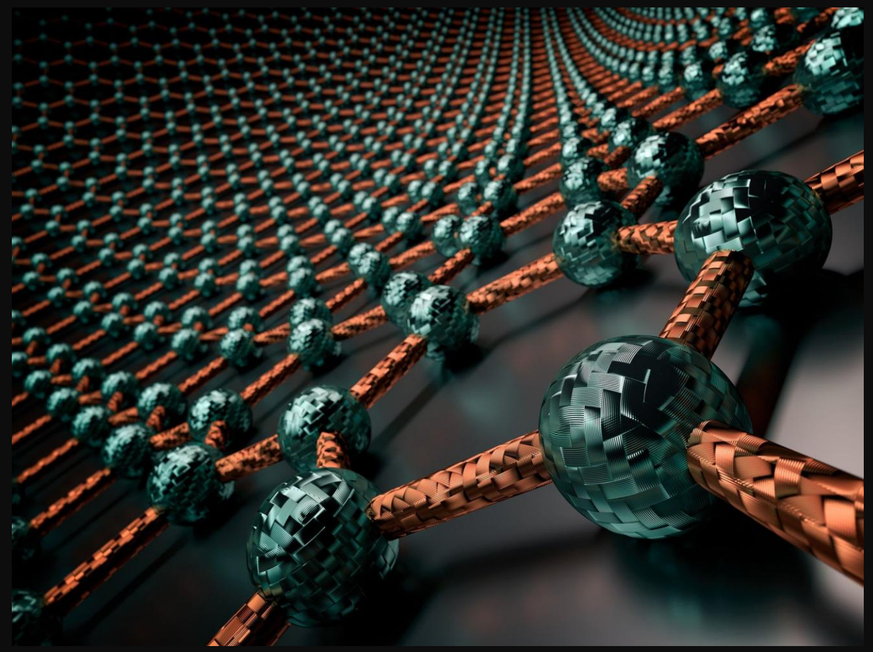

ढोकरा कला (Dokra Art)

ढोकरा कला (Dokra Art)

Daily Current News

Result Mitra

- **ढोकरा कला (Dokra Art): भारत की पारंपरिक धातु शिल्पकला**
- **परिचय:**
- ढोकरा कला भारत की एक प्राचीन आदिवासी धातु शिल्पकला है, जो लुप्त मोम विधि (Lost-wax casting) से बनाई जाती है।
- यह कला 4,000 साल पुरानी मानी जाती है और इसका इतिहास सिंधु घाटी सभ्यता से जुड़ा हुआ है।
- ढोकरा कला का उपयोग धार्मिक मूर्तियाँ, पशु आकृतियाँ, आभूषण, घरेलू सजावट की वस्तुएं और लोकजीवन से जुड़ी आकृतियों को बनाने में किया जाता है।

ढोकरा कला (Dokra Art)

Daily Current News

Result Mitra

- **ढोकरा कला की विशेषताएं:**
- 1. लुप्त मोम विधि (Lost-wax casting technique):
- इसमें सबसे पहले मोम से मूर्ति का मॉडल बनाया जाता है।
- फिर उसे मिट्टी की परतों से ढंका जाता है।
- जब यह सांचा गर्म किया जाता है, तो मोम पिघलकर निकल जाता है और उसके स्थान पर पिघली हुई धातु (जैसे पीतल) डाली जाती है।
- सांचा एक बार ही उपयोग होता है, इसलिए हर मूर्ति अद्वितीय (Unique) होती है।

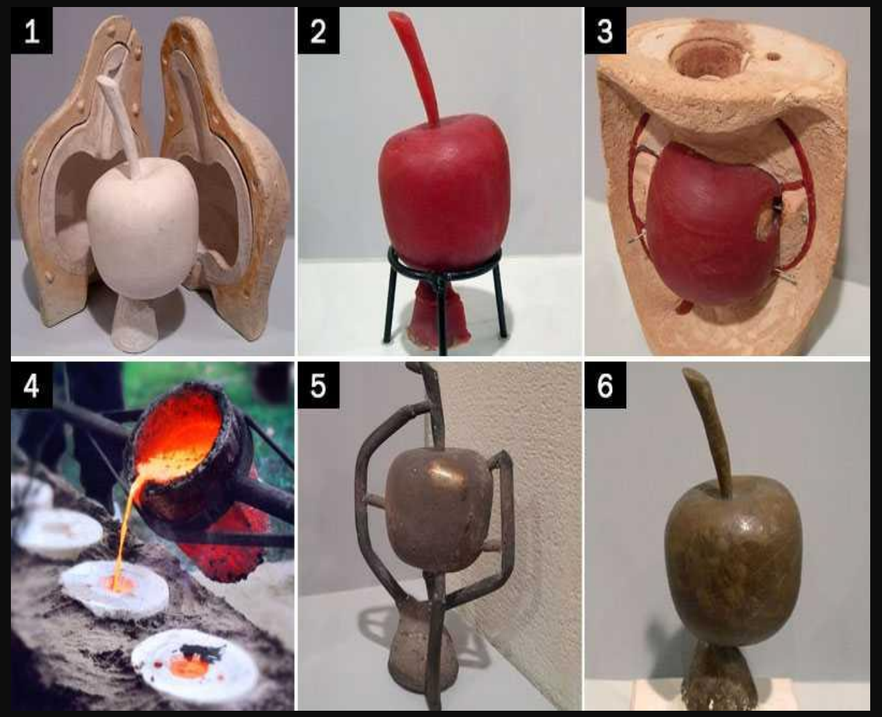

ढोकरा कला (Dokra Art)

Result Mitra

- **2. सजावट और डिज़ाइन:**
- जटिल नक्काशी, धागा-जैसे पैटर्न, और गहनों की तरह सजावट इस कला की पहचान है।
- कई बार रंगीन लाह (Lacquer inlay) से भी इसे सजाया जाता है।
- **3. प्राकृतिक और सांस्कृतिक प्रेरणा:**
- विषयों में पशु-पक्षी, मानव आकृतियाँ, देवी-देवता, लोककथाओं के पात्र शामिल होते हैं।

ढोकरा कला (Dokra Art)

Result Mitra

- **ढोकरा कला के क्षेत्र:**
- यह कला भारत के पूर्वी और मध्य हिस्सों में विशेष रूप से प्रचलित है:
- छत्तीसगढ़ (बस्तर क्षेत्र)
- ओडिशा (कोंधमाल, नयागढ़)
- झारखंड (गढ़वा, पलामू)
- पश्चिम बंगाल (बीरभूम, बांकुरा)
- तेलंगाना और आंध्रप्रदेश के कुछ भाग
- इस कला का नाम "ढोकरा डामर" जनजातियों के नाम पर पड़ा है जो कभी बंगाल से मध्य भारत तक घूमा करते थे।

ढोकरा कला (Dokra Art)

Daily Current News

Result Mitra

- **ढोकरा कला का समकालीन महत्व:**
- हाल ही में भारत के प्रधानमंत्री ने थाईलैंड के प्रधानमंत्री को ढोकरा कला में बनी मोर के आकार की नाव भेंट की।
- यह न सिर्फ राजनयिक भेंट का माध्यम बना, बल्कि भारत की हस्तशिल्प परंपरा और सांस्कृतिक कूटनीति को भी दर्शाता है।
- ढोकरा उत्पाद आज राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय बाजारों में लोकप्रिय हैं।
- यह कला आजीविका का साधन भी बन चुकी है, खासकर आदिवासी शिल्पकारों के लिए।

ढोकरा कला (Dokra Art)

Result Mitra

- **सरकार की पहलें:**
- TRIFED (Tribal Cooperative Marketing Development Federation) के माध्यम से इस कला को बाज़ार उपलब्ध कराया जा रहा है।
- GI टैग (Geographical Indication Tag): छत्तीसगढ़ और पश्चिम बंगाल की ढोकरा कला को GI टैग प्राप्त हुआ है।
- हुनर हाट, मेला, ऑनलाइन प्लेटफार्म (जैसे GeM, Tribes India) के ज़रिए इस कला को बढ़ावा दिया जा रहा है।

Thank
you